प्रातःकाल शैय्या छोड़ने से पूर्व निम्नलिखित मंत्रों का उच्चारण कर परमपिता परमात्मा का ध्यान करें।

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ।।१।।
ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता।
आध्रश्चिद्यं मनयमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ।।२।।
ओं भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ।।३।।
ओं उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघंवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ।।४।।
ओं भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह ।।५।।

यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

भोजन से पूर्व *इस मंत्र को बोलें।*

ओं अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्र दातारं तारिषं ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

सन्ध्या (ब्रह्मयज्ञ)

निम्नलिखित मंत्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन बार आचमन करें :-

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः।।

सर्वव्यापक परमेश्वर मनोवांछित सुख और पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए हमको कल्याणकारी हो और हम पर सब ओर से सुख की वृष्टि करे ।। १।।

अथेन्द्रियस्पर्श मन्त्र

ओं वाक् वाक्।	इस मन्त्र से मुख का दक्षिण और वाम पार्श्व।
ओं प्राणः प्राणः।	इससे दक्षिण और वाम नासिका के छिद्र।
ओं चक्षुश्चक्षुः।	इससे दक्षिण और वाम नेत्र।
ओं श्रोत्रं श्रोत्रं।	इससे दक्षिण और वाम श्रोत्र।
ओं नाभिः।	इससे नाभि।
ओं हृदयम्।	इससे हृदय।
ओं कण्ठः।	इससे कण्ठ।
ओं शिरः।	इससे मस्तक।
ओं बाहुभ्यां यशोबलम्।	इससे दोनों भुजाओं के मूल स्कन्ध।
ओं करतल कर पृष्ठे।	इससे दोनों हाथों के ऊपर तले स्पर्श करें।

हे अन्तर्यामिन् ! मैं प्रार्थना करता हूं कि मैं जान बूझकर अपना ज्ञान-कर्म इन्द्रियों से, अर्थात् वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, हृदय, कण्ठ, शिर, बाहु, करतल और करपृष्ठ आदि से कदापि पाप न करूं, ऐसी कृपा करो।

अब ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक **मार्जन मंत्र** लिखे जाते हैं :–

ओं भूः पुनातु शिरसि। इस मंत्र से शिर।

ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। इस मंत्र से दोनों नेत्रों पर।

ओं स्वः पुनातु कण्ठे। इस मंत्र से कण्ठ पर।

ओं महः पुनातु हृदये। इस मंत्र से हृदय पर।

ओ जनः पुनातु नाभ्याम्। इस मंत्र से नाभि पर।

ओं तपः पुनातु पादयोः। इस मंत्र से दोनों पगों पर।

ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। इस मंत्र से पुनः शिर पर।

ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। इस मंत्र से सब अंगों पर जल छिड़कें।

हे दयानिधे ! आप मेरी इन्द्रियों, अर्थात् शिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय, नाभि, पांव आदि को पवित्र करके बलवान् और यशस्वी कीजिए।।

प्राणायाम मंत्र

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः।
ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।

प्राणस्वरूप, प्राणों से प्यारा, दुःख दूर करने हारा, सर्वव्यापक आनन्द–स्वरूप, सबसे बड़ा, सबका (जनक) पिता, दुष्टों को संतापकारी, सबके जानने वाला और अविनाशी प्रभु है।

अघमर्षण-मंत्र

ओं ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।१।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।२।।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।३।।

परमेश्वर के अनन्त सामर्थ्य से वेद-विद्या और कार्यरूप प्रकृति उत्पन्न हुई। उसी के सामर्थ्य से प्रलय और उसी के सामर्थ्य से समुद्र उत्पन्न हुए।। १।।

जगत् को वश में रखने वाले परमेश्वर ने अपने सहज स्वभाव से जलकोष के पीछे काल के विभाग-वर्ष, दिन और रात्रि-रचे।। २।।

विधाता ने सूर्य, चन्द्र, द्युलोक, पृथ्वीलोक, अन्तरिक्ष और उस में फिरने वाले सब लोक-लोकान्तर यथापूर्व बनाए।। ३।।

पुनः 'शन्नो देवी०' मंत्र से तीन आचमन करें।

।। मनसा परिक्रमा मन्त्राः।

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।। १।।

हे सर्वज्ञ परमेश्वर ! आप हमारे सम्मुख की ओर विद्यमान हैं, स्वतन्त्र राजा और हमारी रक्षा करने वाले हैं, आपने सूर्य को रचा है। जिसकी किरणों द्वारा पृथ्वी पर जीवन आता है। **आपके आधिपत्य, रक्षा और जीवन प्रदान के लिए, हे प्रभो ! आपको बारम्बार नमस्कार है। जो अज्ञानवश हमसे द्वेष करता है अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं, उसे आपके न्यायरूपी सामर्थ्य पर छोड़ते हैं।**

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।। २।।

हे परमेश्वर ! आप हमारे दक्षिण की ओर व्यापक हैं। आप हमारे राजाधिराज हैं और भुजंगादि बिना हड्डी वाले जन्तुओं से हमारी रक्षा करते हैं, और ज्ञानियों के द्वारा हमें ज्ञान प्रदान करते हैं। आपके आधिपत्य ....(आगे पूर्व मंत्र के अर्थ के समान)।

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः।
तेभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।। ३।।

हे सौन्दर्य के भण्डार ! आप हमारे पृष्ठ की ओर हैं, हमारे महाराज हैं, बड़े-बड़े हड्डी वाले और विषधारी जन्तुओं से हमारी रक्षा करते हैं। आपके आधिपत्य......(आगे पूर्ववत्)।

उदीची दिग्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।। ४।।

हे पिता ! आप हमारे वाम पार्श्व में व्यापक हैं और हमारे परम ऐश्वर्ययुक्त स्वामी हैं। स्वयम्भू और हमारे रक्षक हैं, आप ही बिजली द्वारा रुधिर की गति और प्राणों की रक्षा करते हैं। आपके आधिपत्य .... (आगे पूर्ववत्)।

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।। ५।।

हे सर्वव्यापक प्रभो ! आप हमारे नीचे की ओर के देशों में विद्यमान हैं। आप रंग वाले वृक्षों और लताओं द्वारा हमारे प्राणों की रक्षा करते हैं। आपके आधिपत्य ...... (आगे पूर्ववत्)।

ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।। ६।।

हे महान् प्रभो ! आप ऊपर के लोकों में व्यापक, पवित्रात्मा, हमारे स्वामी और रक्षक हैं। आप वर्षा करके हमारी कृषि को सींचते हैं जिससे हमारा जीवन होता है। आपके आधिपत्य .... (आगे पूर्ववत्)।

उपस्थान मंत्र

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।। १।।

हे प्रभो ! आप अज्ञान अन्धकार के परे, सुखस्वरूप, प्रलय के पश्चात् रहने वाले, दिव्य गुणों के साथ सर्वत्र विद्यमान देव और हमको जन्म देने वाले हैं, हम आपके उत्तम ज्योतिः स्वरूप को प्राप्त हों।। १।।

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ।। २।।

हे जगदीश्वर ! आप सकल ऐश्वर्य के उत्पादक, सर्वज्ञ, जीवात्मा के प्रकाशक हैं, आपकी महिमा सबको दिखाने के लिए संसार के पदार्थ पताका का काम करते हैं। जैसे झण्डियां मार्ग दिखलाती हैं उसी प्रकार सृष्टि-नियम सबको, परमेश्वर की प्रतीति कराते हैं।। २।।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य
आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ।। ३।।

हे स्वामिन् ! इस संसार के समस्त पदार्थ आपको दर्शाते हैं। आप दिव्य पदार्थों के बल हैं। सूर्य, चन्द्र और अग्नि के चक्षु अथवा प्रकाशक हैं। भूमि, आकाश और तदन्तर्गत लोक सब आपके सामर्थ्य में हैं। आप चर-अचर जगत् के उत्पादक और अन्तर्यामी हैं। हे प्रभो ! हम सर्वत्र मन, वाणी और कर्म से सत्य का ग्रहण करें।। ३।।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं,
श्रृणुयाम शरदः शतं, प्र ब्रवाम शरदः शतं-
मदीनाः स्याम शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात्।। ४।।

(यजु॰ ३६ / २४)

हे सबके मार्गदर्शक ! आप अनादि काल से विद्वानों और संसार के हितार्थ शुद्ध वर्तमान हैं। प्रभो ! हम आपका ज्ञान सौ वर्ष सुनें, आपके नाम का सौ वर्ष व्याख्यान करें, सौ वर्ष की आयु भर पराधीन

न हों और यदि योगाभ्यास से सौ वर्ष से भी अधिक आयु हो तो इसी प्रकार विचरें।। ४।।

गायत्री मंत्र

**ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।**

(यजु० ३६ / ३)

हे प्राणस्वरूप दुःखहर्ता, सर्वव्यापक आनन्द के देने वाले प्रभो। आप सर्वज्ञ और सकल जगत् के उत्पादक हैं। हम आपके उस पूजनीय पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। हे पिता ! आप से हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मो में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है।

अथ समर्पण

**हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा
धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।।**

हे परमेश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जपोपासनादि कर्मो को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें।

नमस्कार मंत्र

**ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च
मयस्कराय च। नमः शिवाय च शिवतराय च।।**

(यजु० १६ / ४१)

जो सुख स्वरूप संसार के उत्तम सुखों का देने वाला, कल्याणकारी मोक्षस्वरूप, धर्म-युक्त कार्यो का ही करने वाला, अपने भक्तों को सुख देने वाला और धर्म कार्यो में युक्त करने वाला, अत्यन्त मंगलस्वरूप एवं धार्मिक मनुष्यों को मोक्षसुख देने हारा है उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

सामान्य नित्य यज्ञ

प्रथम निम्नलिखित मंत्रो से तीन बार **आचमन** करें।

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।। १।। इससे पहला
ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा।। २।। इससे दूसरा
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।। ३।। इससे तीसरा

*निम्नलिखित मंत्रों के साथ जल से **अंग स्पर्श** करें*

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु।। १।। (मुख को स्पर्श करें)
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु।। २।। (दोनों नथनों को स्पर्श करें)
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।। ३।। (दोनों आंखों को स्पर्श करें)
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।। ४।। (दोनों कानों को स्पर्श करें)
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ।। ५।। (दोनों भुजाओं को स्पर्श करें)
ओं ऊर्ध्वोर्मे ओजोऽस्तु।। ६।। (दोनों जंघाओं को स्पर्श करें)
ओं अरिष्टानि मे अंगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।। ७।।
(सारे शरीर पर जल छिड़कें)

अंगस्पर्श के पश्चात् **ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना** मंत्रो का पाठ करें –

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव ।।१।। *(यजु॰ ३० / ३)*

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। २।।
(यजु॰ १३ / ४)

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ३।।
(यजु॰ २५ / १३)

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो वभूव
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ४।।
(यजु॰ २३ / ३)

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ५।।

(यजु० ३२ । ६)

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। ६।।

(ऋग० १० । १२१ ।१०)

स नो बंधुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।। ७।।

(यजु० ३२ । १०)

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।। ८।।

(यजु० ४० । १६)

अथ स्वस्तिवाचनम्

स्वस्तिवाचन मत्र, ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना मंत्रों के पश्चात् बोलें।

१ ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।।

२ स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये।। (ऋ० १-१-१, ६)

३ स्वस्ति नो मिमीतामश्विाना भगः स्वस्ति देव्य-
दितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावा
पृथिवी सुचेतुना।।

४ स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पति सर्वगणं स्वस्तये आदित्यासो भवन्तु नः।।

५ विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।।

६ स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न
इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।।

७ स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि।। (ऋ० ५-५१-११ से १५)

८ ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। (ऋ० ७-३५-१५)

६ येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषंद्यौरदितिरद्रिबर्हाः। उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये।।

१० नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः। ज्योतिरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।।

११ सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरेदिविक्षयम्। ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्यां अदितिं स्वस्तये।।

१२ को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन। को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो न पर्षदत्यंहः स्वस्तये।।

१३ येभ्यो होत्रां प्रथमामयेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः। त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त्तसुपथा स्वस्तये।।

१४ य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः। ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये।।

१५ भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहे ऽ होमुचं सुकृतं दैव्यंजनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये।।

१६ सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्। दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमारुहेमा स्वस्तये।।

१७ विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः। सत्यया वो देवहूत्या हुवेम श्रृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।

१८ अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विंदत्रामघायतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरूणः शर्म यच्छता स्वस्तये।।

१६ अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि। यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।।

२० यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने। प्रातर्यावाणं रथमिन्द्रसानसिमरिष्यन्तमारुहेमा स्तस्तये।।

२१ स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन।।

२२ स्वस्ति रिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति। सानो अमा सो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु देवगोपा।।

(ऋ० १०-६३-३ से १६)

२३ इषेत्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशतः माघश ँ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।। (यजु० १-१)

२४ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोअपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सद्मिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।

२५ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ँरातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवाना ँसख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।

२६ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

२७ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

२८ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टु वा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

(यजु॰ २५/१४, १५, १८, १६, २१)

२६ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि।

३० त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषेजने।।

(साम॰ छन्द आ॰ प्रपा॰ १, १-२)

३१ ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः। वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।

(अथर्व॰ कां॰ १/ सू॰ १० मं॰ १)

अथ शान्तिकरणम्

१ ओ३म् शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रात हव्या। शमिंद्रासोमा सुविताय शंयोः शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।।

२ शन्नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शंनः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्य्यमा पुरुजातो अस्तु।।

३ शन्नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शन्नः उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शन्नो अद्रिः शन्नो देवाना सुहवानि सन्तु।।

४ शन्नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शन्नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शन्नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शन्न इषिरो अभिवातु वातः।।

५ शन्नो द्यावा पृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शन्न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।।

६ शन्न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः श नरत्त्वष्टा ग्नाभिरिह श्रृणोतु।।

७ शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।।

८ शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।

६ शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।।

१० शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शन्नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।।

११ शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शन्नो अप्याः।।

१२ शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं नः ऋृभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।

१३ शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा।।

(ऋ० ७।३५।१-१३)

१४ इन्द्रो विश्वस्य राजति शं नोऽस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।।

१५ शं नो वातः पवता ꣳ शं नस्तपतु सूर्य्यः। शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु।।

१६ अहानि शं भवन्तु नः शं ꣳ रात्रीः प्रतिधीयताम्। शं नः इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शं नः इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः।।

१७ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।।

१८ द्यौः शन्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

१९ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात्।।

(यजु० ३६।८, १०-१२, १७, २४)

२० यज्जाग्रतो दूरमुदेति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

२१ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

२२ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्नऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

२३ येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

२४ यस्मिन्नृचः सामः यजू ꣳ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्त ꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे

मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

२५ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिव- संकल्पमस्तु।।

(यजु॰ ३४। १-६)

२६ स नः पवस्व शंगवे शं जनाय शमर्वते। श ँ राजन्नोषधीभ्यः।। *(साम॰ उतरार्चिके प्रपा १। ख॰ १।। म॰ ३)*

२७ अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।

२८ अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

(अथर्व॰ १६ सू॰ १५ म॰ ५, ६)

अथ अग्निहोत्र विधि

सम्मुख रखे यज्ञकुण्ड में समिधाओं का चयन करें और चम्मच में कपूर रखकर जलायें तथा –

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।।

फिर अगले मंत्र को बोलकर उस अग्नि को हवनकुण्ड में रख दें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्नापृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।१।

निम्नलिखित मंत्र से अग्नि को घृत तथा छोटी-छोटी समिधा रखकर प्रज्वलित करें।

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।२।

****

नीचे लिखे मंत्रों से तीन समिधा घृत में भिगोकर तीन बार आहुतियां दें।

(१) ओ३म् अयन्त इध्मऽआत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व

चेद्धवर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा इदमग्नये जातवेदसे इदन्नमम।।

(इससे एक समिधा)

(२) ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।। इदमग्नये इदन्नमम।। सु समिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतनं अग्नये जातवेदसे स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।

(इन दोनों मंत्रों से दूसरी समिधा)

(३) ओ३म् तन्त्वा समिदि्भरंगिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचायविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङि्.गिरसे इदन्न मम।।

(इससे तीसरी समिधा)

****

निम्न मंत्र से **धी की पांच आहुतियां** दे

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्धवर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।

****

अधोलिखित मंत्रों से वेदी के चारों ओर मंत्र के सामने दिये निर्देश के अनुरूप जल छिड़कें।

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व।। १।। (इससे पूर्व दिशा में)

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व।। २।। (इससे पश्चिम में)

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व।। ३।। (तथा इससे उत्तर में)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं न स्वदतु।। ४।।

यजुर्वेद अ० ३० मं० १।। (इससे वेदी के चारों ओर जल छिड़कें)

****

आधारावज्याहुति—निम्नलिखित मंत्रों से घृताहुति दें।

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।। १।।

(इस मंत्र से यज्ञकुण्ड के उत्तर भाग में घृताहुति देवें)

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।। २।।

(इस मंत्र से यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में)

आज्यभागाहुति—इन मंत्रों से यज्ञकुण्ड के मध्यभाग में घृताहुति देवें।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।। १।।

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदन्नमम।।२।।

प्रातःकालीन आहुति के मन्त्र

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।१।

ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।२।

ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।३।

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।४।

सायंकालीन आहुति के मन्त्र

ओ३म् अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा। १।

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। २।

ओ३म् अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा। ३।

(इस मन्त्र को मन में बोलकर तीसरी आहुति)

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या
जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।४।

प्रातः सांय दोनों समय के मन्त्र

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।।
ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।।
ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।
ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादिंत्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।।
ओ३म् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।
ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

ओ३म् विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा । *य०अ० ३०। मं० ३।।*
ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

जो व्यक्ति प्रातःकाल व सायंकाल यज्ञ करते हैं, वे प्रातःकाल की आहुतियां प्रातः तथा सायंकाल की आहुतियां ही सांयकाल को दें, तदनन्तर पूर्णाहुति करें, किन्तु जो व्यक्ति दिन में एक बार ही यज्ञ करते हैं वे दोनों समय की आहुतियां उपरलिखित क्रमानुसार दें, तदनन्तर आगे लिखे मंत्रों से आहुति देकर पूर्णाहुति करें।

महा व्याहृत्याहुति मंत्र

१ ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।।
२ ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे इदन्न मम।।
३ ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा।इदमादित्याय इदन्न मम।।
४ ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निावाय्वादित्येभ्यःस्वाहा।
इदमग्नि वाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम।.

विशेष यज्ञों तथा संस्कारादियों में

महाव्याहृति मंत्र 'ओं भूरग्नये स्वाहा' आदि चार मंत्रों की आहुति देने के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र से स्विष्टकृत् आहुति घृत अथवा भात की देनी चाहिए।

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।। इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम।

(पा॰ १।२।१०।श॰ १।१५।६।४।२६)

प्राजापत्याहुतिः

नीचे लिखे मंत्र को मन में बोलकर देनी चाहिए।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।।१।।

(आ॰ १। ८।३)

पवमानाहुतिः

अब प्रधान होम सम्बन्धी चार आहुतियां घृत की इन मंत्रों से देवें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।२।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्नि ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।। ३।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।। ४।।

(ऋ॰ ९। ६६। १९, २०, २१)

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा।। इदं प्रजापतये इदन्न मम।। ५।।

(ऋ॰ १०। १२। १। १०)

अष्टाज्याहुतयः

साधारण हवन तथा संस्कारों में विशेष-विशेष अवसर पर निम्नलिखित आठ आज्याहुति इन आठ मंत्रों से दें।

ओ३म् त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽवयासिसीष्ठा। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्यमत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम् इदन्न मम।।१।।

ओ३म् स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि सवाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्याम् इदन्न मम।। २।।

(ऋ० ४। १। ४, ५)

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युराचके स्वाहा। इदं वरुणाय इदन्न मम।।३।।

(ऋ० १। २५। १६)

ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषी स्वाहा। इदं वरुणाय इदन्न मम।। ४।।

(ऋ०१। २४। ११)

ओ३म् ये ते शतं वरूण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विशणुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम।।५।।

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ँ स्वाहा।। इदमग्नये अयसे इदन्न मम।।६।।

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायाऽऽदित्यायाअदितये च इदन्न मम।। ७।। *(ऋ० १/२४/१५)*

ओ३म् भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञ ँ हि ँ सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा।। इदं जातवेदोभ्याम् इदन्न मम।। ८।। *(यजु० ५/३)*

उपरिलिखित आठ मंत्रों की आहुति देकर प्रातः एवं सायंकाल के मत्रो की आहुति देनी चाहिए और पूर्णाहुति तक पूर्वोक्त विधि को करें।

पूर्णमासी की आहुतियां

ओं अग्नये स्वाहा।। १।।
ओं अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा।। २।।
ओं विष्णवे स्वाहा।। ३।।

अमावस्या की आहुतियां

ओं अग्नये स्वाहा।। १।।
ओं इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा।। २।।
ओं विष्णवे स्वाहा।। ३।।

पूर्णाहुतयाः

निम्नलिखित मंत्रों को तीन बार बोलकर सभी अवशिष्ट हव्य की आहुति देवें।

ओ३म् सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।
ओ३म् सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।
ओ३म् सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।

पितृ यज्ञ

अग्निहोत्र की विधि पूर्ण करके तीसरा यज्ञ पितृयज्ञ करे अर्थात् जीवित माता-पिता आदि की यथावत सेवा करे यही 'पितृयज्ञ' कहाता है।

अतिथि यज्ञ

जो धार्मिक, परोपकारी, सत्योपदेशक, पक्षपात रहित, शान्त, सर्वहितकारक विद्वानों की अन्नादि से सेवा, उनसे प्रश्नोंत्तर आदि करके विद्या प्राप्त होना, 'अतिथि यज्ञ' कहाता है, उसको नित्य किया करें। इस प्रकार पंच महायज्ञों को स्त्री पुरुष प्रतिदिन करते रहें।

बलिवैश्वदेव यज्ञ विधि

निम्नलिखित १० मंत्रों से घृत के पात्र में शक्कर आदि मिला कर बलिवैश्वदेव यज्ञ के निमित्त आहुति दें :–

ओम् अग्नये स्वाहा।। १।। ओं सोमाय स्वाहा।। २।।
ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा।। ३।। ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।। ४।।
ओं धन्वन्तरये स्वाहा।। ५।। ओं कुह्वै स्वाहा।। ६।।
ओम् अनुमत्यै स्वाहा।। ७।। ओं प्रजापतये स्वाहा।। ८।।
ओं द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा।। ६।। ओं स्विष्टकृते स्वाहा।। १०।।

इन दश मन्त्रों से घृत मिश्रित भात की, यदि भाव न बना हो तो क्षार और लवणान्न को छोड़ के जो कुछ पाक में बना हो उसकी, दस आहुति करें।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से **बलि दान करें** –

ओ३म् सानुगायेन्द्राय नमः। इससे पूर्व।
ओ३म् सानुगाय यमाय नमः। इससे दक्षिण।

ओ३म् सानुगाय वरुणाय नमः। इससे पश्चिम।

ओ३म् सानुगाय सोमाय नमः। इससे उत्तर।

ओ३म् मरुद्भ्यो नमः। इससे द्वार।

ओ३म् अद्भ्यो नमः। इससे जल।

ओ३म् वनस्पतिभ्यो नमः। इससे **मूसल और ऊखल**।

ओ३म् श्रियै नमः। इससे ईशान।

ओ३म् भद्रकाल्यै नमः। इससे नैर्ऋत्य।

ओ३म् ब्रह्मपतये नमः। ओ३म् वास्तुपतये नमः। इनसे मध्य।

ओ३म् विश्वेभ्यो देवोभ्यो नमः ओ३म् दिवा चारिभ्योभूतेभ्यो नमः

ओ३म् नक्तंचारिभ्यो नमः। इनसे ऊपर।

ओ३म् सर्वात्मत्भूतये नमः। इससे पृष्ठ

ओ३म् पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। इससे दक्षिण।

इन मन्त्रों से एक पत्तल या थाली में यथोक्त दिशाओं में भाग धरना। यदि भाग धरने के समय कोई अतिथि आ जाय तो उसी को दे देना, नहीं तो अग्नि में धर देना। तत्पश्चात् घृतसहित लवणान्न लेके।

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि।। *(मनु० ३/९२)*

अर्थ – कुत्ता, पतित, चाण्डाल, पापरोगी, काक और कृमि इन छः नामों से छः भाग पृथिवी में धरे, और वे छः भाग जिस जिसके नाम हैं, उस उसको देना चाहिये।

मंगलकार्य

अर्थात् **गर्भोधानादि संन्यास संस्कार पर्यन्त** पूर्वोक्त और निम्नलिखित सामवेदोक्त वामदेव्यगान अवश्य करें। वे मन्त्र ये हैं –

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। कया निश्चत्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।१।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। कस्त्वा सत्यो मदानां मँहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु।२।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्। शतं भवास्यूतये।३।

महावामदेव्यम्-ओ३म् काऽ५या। नश्चा३ इत्रा३ आभुवात्। ऊ। ती सदावृधः स। खा। औ३होहाइ। क्या २ ३ शचाइ। ष्ठयौहो३। हुम्मा२। वा२र्तो३ऽ५हाइ।(१)।

ओ३म् काऽ५स्त्वा। सतयो३मा३दानाम्। मा। हिष्ठो मात्सादन्ध। सा। औ३होहाइ। दृढ़ा २ ३ चिदा। रुजौहो३। हुम्मा१। वाऽ३सो३ऽ५ हायि। (२)।

ओ३म् आऽ५भी। षु णा३ः सा३खीनाम्। आ। विता जरायितृ। णाम् औ२३ हो हायि। शता २ ३ म्भवा। सियौहो३। हुम्मा२। ताऽ२ यो३ऽ५ हायि।

(३) *साम० उत्तरार्च्चिके। अध्याये १। खं० ४। मं० १—३*

यह वामदेव्यगान होने के पश्चात् गृहस्थ स्त्री पुरुष कार्यकर्त्ता सद्धर्मी लोकप्रिय परोपकारी सज्जन विद्वान् वा त्यागी पक्षपातरहित संन्यासी जो सदा विद्या की वृद्धि और सब के कल्याणार्थ वर्त्तनेवाले हों उनको नमस्कार, आसन, अन्न, जल, वस्त्र, पात्र, धन, दान आदि के दान से उत्तम प्रकार से यथासामर्थ्य सत्कार करें।

नवशस्येष्टि और संवत्सरेष्टियज्ञ

और जब-जब नवान्न आवे तब-तब **नवशस्येष्टि** और **संवत्सर** के आरम्भ में निम्नलिखितविधि करें, अर्थात् जब-जब नवीन अन्न आवे

तब-तब नवशस्येष्टि करके नवीन अन्न के भोजन का आरम्भ करें –

नवशस्येष्टि और संवत्सरेष्टि करना हो तो जिस दिन प्रसन्नता हो वही शुभ दिन जाने। ग्राम और शहर के बाहर किसी शुद्ध खेत में यज्ञ-मण्डप करके, प्रथम आधारावाज्यभागाहुति चार और व्याहृति आहुति चार तथा अष्टाज्याहुति आठ, ये सोलह आज्याहुति करके, कार्यकर्त्ता –

ओ३म् पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृताः।
तमिहेन्द्रमुपह्वयो शिवा नः सन्तु हेतयः स्वाहा।१।
ओ३म् यन्मे किञ्चिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन्।
तन्मे सर्वं समृध्यतां जीवतः शरदः शतं स्वाहा।२।

ओ३म् सम्पत्तिर्भूतिर्भूमिर्वृष्टिर्ज्यैष्ठ्यं श्रैष्ठ्यं श्रीः प्रजामिहावतु स्वाहा। इदमिन्द्राय-इदन्न मम।३।

ओ३म् यस्याभावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम्। इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीतां सा मे त्वनपायिनी कर्मणि भूयात्कर्मणि स्वाहा। इदमिन्द्रपत्न्यै- इदन्न मम।४।

ओ३म् अश्वावती गोमती सूनृतावती विभर्त्ति या प्राणभृतो अतन्द्रिता। खलमालिनीमुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपह्वये ध्रुवां सा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहा। इदं सीतायै-इदन्न मम।५।

(पार० का० २।कं० १७।६)

इन मन्त्रों से प्रधान होम की ५ आज्याहुति करके –

ओ३म् सीतायै स्वाहा।१। ओ३म् प्रजायै स्वाहा।२।
ओ३म् शमायै स्वाहा।३। ओ३म् भूत्यै स्वाहा।४।

(पार० का० २।कं० १७।१०)

इन चार मन्त्रों से चार, और पृष्ठ २१ में लिखे (यदस्य०) मन्त्र से स्विष्टकृत् होमाहुति एक, ऐसे पांच स्थालीपाक की आहुति देके, पश्चात् पृष्ठ २२ में लिखे प्रमाणे **वामदेव्यगान, ईश्वरोपासना, स्वस्तिवाचन** और **शान्तिकरण** करके यज्ञ की समाप्ति करें।

ऋग्वेद का संगठन सूक्त

१
ओं सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर
हे प्रभो तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिये धन वृष्टि को

२
ओं संगच्छध्वं सवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो

३
ओं समानो मंत्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि
हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब नेक हों

४
ओं समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा

सबका भला करो भगवान

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्

सबका भला करो भगवान् सब पर दया करो भगवान्।
सब पर कृपा करो भगवान् सबका सब विधि हो कल्याण।।

हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन् धन धान्य के भण्डारी।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी।।

यज्ञ प्रार्थना

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये।।

वेद की बोलें ऋचाएं सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें।।

अश्वमेघादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।।

नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।

भावना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारि की।।

लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये।।

स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
इदन्न मम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।

प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे।।

प्रभु भक्ति

शरण प्रभु की आओ रे ! यही समय है प्यारे।
आओ प्रभु गुण गाओ रे ! यही समय है प्यारे।
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे, यही.....
अमृत झरना झरता झर-झर, इसे पी के अमर हो जाओ रे, यही.....
छल कपट और झूठ को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे, यही.....
हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे, यही.....
करलो आज तुम प्रभु का सुमिरन, अन्त को न पछताओ रे, यही....
छोटे-बड़े सब मिलके खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे, यही.....

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्रीः धेनुर्वोढानडवानाशु सप्तिः पुरन्धीर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

(यजु० २-२२)

"ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरि-दल-विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौवें, वृष अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हो, नारी सुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योधा, यजमान-पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें।।
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोध सारी
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी।।"

हे जगदीश दयालु ब्रह्मन् प्रभु ! सुनिये विनय हमारी।
हों ब्राह्मण उत्पन्न देश में धर्म कर्म व्रतधारी ।।
क्षत्रिय हों रणधीर महारथी धनुर्वेद अधिकारी।
धेनु दूध वाली हों सुन्दर बृषभ तुंग बलधारी।।
हों तुरंग गति चपल, अंगना हो स्वरूप गुण वाली।
विजयरथी पुत्र जनपद के रत्न तेज बलशाली।।
जब ही जब करे कामना जलधर जल बरसावें।
फलें पकें बहु सुखद वनस्पति, योग-क्षेम सब पावें।
द्विज वेद पढ़ें सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़ें सब ऊपर को।
अविरुद्ध रहें ऋजु पन्थ गहें, परिवार कहें वसुधा भर को।।
ध्रुव धर्म धरें, पर दुःख हरें, तन त्याग तरें भवसागर को ।
दिन फेर पिता, वर दे सविता, हम आर्य करें भूमण्डल को।।

उस प्रभु के धन्यवाद

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद।।

मन्दिरों में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद।।

करते हैं जंगल में मंगल पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद।।

कूप में, तालाब में, सागर की गहरी धार में।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद।।

शादियों में कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के आदिं।
मीठे स्वर से चाहिये करें नारी नर सब धन्यवाद।।

गानकर 'अमीरचन्द' भजनानन्द ईश्वरी की स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर-कर धन्यवाद।।

उठ जाग मुसाफिर

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है।।

टुक नींद से अंखियां खोल जरा और अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं प्रभु जागत है तू सोवत है।।

जो कल करना सो अज कर ले जो अज करना सो अब कर ले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया फिर पछताये क्या होवत है।

नादान भुगत करनी अपनी अब पापी पाप में चैन कहां।
जब पाप की गठरी सीस धरी फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है।।

अब सौंप दिया

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।।
मेरा निश्चय है एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं
अर्पण कर दूं जगती भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में
जब-जब संसार का बन्दी बनू, दरबार में तेरे आऊं मैं।
हो मेरे कर्मों का निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथों में।
यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले, तब तब चरणों का पुजारी बनूं
इस पूजक की इक इक रग का हो तार तुम्हारे हाथों में
या तो मैं जग से दूर रहूं और जग में रहूं तो ऐसे रहूं।
इस पार तुम्हारे हाथों में उस पार तुम्हारे हाथों में।
मुझ में तुझ में है भेद यही, मैं नर हूं तुम नारायण हो
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।

सारे जहां के मालिक

सारे जहां के मालिक तेरा ही आसरा है।
राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है, सारे जहां के .....
हम क्या बताएं तुझको, सब कुछ तुझे खबर है,
हर हाल में हमारी तेरी तरफ नजर है।
किस्मत है वो हमारी, जो तेरा फैसला है, राजी है हम.....
हाथों को हम दुआ की खातिर में लायें कैसे,
सजदे में तेरे आकर सिर को झुकायें कैसे।
मजबूरियां हमारी सब तू ही जानता है, राजी है हम.....
रो कर कटे या हंस कर कटती है जिन्दगानी,
तू गम दे या खुशी दे सब तेरी मेहरबानी।
तेरी खुशी समझकर, सब गम भुला दिया है, राजी है हम...
दुनियां बना के मालिक जाने कहां छिपा है,
आता नहीं नजर तू बस एक यही गिला है।
भेजा है इस जहां में तो तेरा शुक्रिया है, राजी है हम...

ओ३म् जय जगदीश हरे

ओ३म् जय जगदीश हरे पिता जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का
मात पिता तुम मेरे, शरण पडूं मैं किस की ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी।
परब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्त्ता
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति
दीनबन्धु दुःखहर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।
करुणाहस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा

अगर पाप में

अगर पाप में आप का दिल नहीं है
तो ईश्वर का मिलना भी मुश्किल नहीं है
न हो उसकी मखलूक से प्यार जिसको
वो आबिद कहाने के काबिल नहीं है। अगर पाप में...
तुझे दुनियां काबू में कर लेगी नादान
जो काबू में तेरे तेरा दिला नहीं है। अगर पाप में....
ये हस्ती है किस की तू रहता है जिसमें
अगर उसकी हस्ती का कायल नहीं है। अगर पाप में.....
जिसे दुनियां कहते हैं ऐ दुनिया वालो
ये रणक्षेत्र है कोई महफिल नहीं है। अगर पाप में.....
जिसे मरना आता नहीं राहे हक में
वो नामर्द हैं, मर्दे काबिल नहीं है। अगर पाप में....
हथेली पे हो जिसका सर इस में कूदे
ये किश्ती है वो जिसका साहिल नहीं है। अगर पाप में....
मुसाफिर है तू हार हरगिज नहीं मान
जरा और चल दूर मंजिल नहीं है। अगर पाप में

आर्य समाज के नियम

१ सकल सत्य विधा, विद्या से जो कुछ जाना जाता है,
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है।

२ सर्वशक्ति सम्पन्न विधाता, ब्रह्म विश्व का करता है,
शुद्ध सच्चिदानन्द निरामय नित्य निशंक न मरता है।
सकल, अनंत, अनादि अजन्मा, भौतिक देह न धरता है,
न्यायशील सर्वज्ञ दयानिधि जड़ जीवों का भरता है।
धरो उसी का ध्यान दूसरा कौन मुक्ति का दाता है,
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है।

३ जो विद्या निधि वेदों को तुम प्यारे पढ़ो पढ़ाओगे।
सुनो सुनाओगे तो अपने तीनों ताप नसाओगे।

४ धारो सत्य असत्य बिसारो तब चारों फल पावोगे,
झूठ सांच को जांच धर्म के धाम काम कर जाओगे।

५ तो न रहेगा उनमें जिनका पंच भूत से नाता है,
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है।

६ तुम सामाजिक अरू देहात्मिक उन्नति अनुदिन किया करो।
मान मुख्य उद्देश्य षडंगी का सबको सुख दिया करो।

७ यथा योग्य वर्तो सबसे प्रतिवार प्रेम यश किया करो,

८ आठों धाम अविद्या को तज विद्या का रस पिया करो।

९ सब की उन्नति में निज उन्नति को नवनिधि नर पाता है,
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है।

१० सब के हितकारी नियमों के पालन में परतन्त्र रहो,
नीति रीति सीखो समाज की गुरू लोगों की गैल गहो।
हितकारी नियमों के पालन का आनन्द स्वतन्त्र लहो।
वैदिक मत के सारभूत यों दश नियमो का भाव कहो।
श्री मद्दयानन्द स्वामी के उपदेशों का खाता है।
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है।

पं. नथूराम शर्मा शंकर

तू ही ईष्ट मेरा

तू ही ईष्ट मेरा तू ही देवता है
तू ही बन्धु सबका तू माता पिता है।
नहीं है कोई चाहना और दिल में
तुझे चाहता हूं यही चाहना है। तू ही ईष्ट मेरा....
ये क्यों ढूंढता फिर रहा है जमाना
तू दिल में है दर्दे दिल की दवा है। तू ही ईष्ट मेरा....
खतावार है हम सभी दुनिया वाले
मगर विश्व में एक तू बेखता है, तू ही ईष्ट मेरा....
जहालत से हम तुझ को देखें न देखें
मगर तू हमें हर धड़ी देखता है। तू ही ईष्ट मेरा....
पता पत्ता-पत्ता तेरा दे रहा है।
ये बिल्कूल गलत है कि तू लापता है। तू ही ईष्ट मेरा....
अगर दर्दे दिल है तो दिल को टटोलो,
कि दिल में ही इस दर्दे दिल की दवा है। तू ही ईष्ट मेरा...
बहुत कोशिशें की बहुत सर खपाया
समझ में न आया कि संसार क्या है। तू ही ईष्ट मेरा....
जवानों, जवानी में कुछ काम कर लो,
समझते हो जिसको जवानी हवा है। तू ही ईष्ट मेरा....
मुसाफिर जरा इस मुसाफिर से पूछो
कहां से चला था कहां जा रहा है। तू ही ईष्ट मेरा....

बनो आर्य खुद

बनो आर्य खुद और जहां को बना दो
जो कहते हो दुनिया को कर के दिखा दो।
प्रभु एक है वेद है उस की वाणी
ये पैगाम स्वामी का घर-घर सुना दो, बनो आर्य खुद
न ऋषियों की तहजीब मिट जाए पल में
मिटाए जो इस को, उन्हें तुम मिटा दो, बनों आर्य खुद
हंसाओ न दुनियां को लड़-लड़ के बाहम
समाजों में उल्फत की गंगा बहा दो। बनो आर्य खुद
जहालत की दीवारें अब तक खड़ी हैं
उठो और इन्हें तुम जड़ से हिला दो। बनो आर्य खुद.....

आर्यसमाज के नियम

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करने योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना- पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

मुद्रक — **सार्वदेशिक प्रकाशन**, १४८८ पटौदी हाउस, दरियागंज,
आर्य अनाथालय के पास, नई दिल्ली—२

दूरभाष : ३२७०५०७, ई० मेल : vedicgod@nda.vsnl.net.in